विद्यालयी शिक्षा का आधार
विद्यालय प्रमुख

माधव पटेल*

विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है, इसलिए उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्नता सुनिश्चित करना विद्यालय प्रमुख का मुख्य लक्ष्य होता है। अभिभावक अपने बच्चों को इसी विश्वास और आशा के साथ विद्यालय भेजते हैं कि वहाँ पर उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सकेगा। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' समतामूलक समाज और समावेशी शिक्षा के अंतर्गत सभी विद्यार्थियों के लिए अधिगम को सुलभ बनाने पर बल देती है। इसके लिए विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था को बेहतर बनाने की दिशा में एक विद्यालय प्रमुख के कुछ दायित्व होते हैं। उन दायित्वों को पूरा करने के लिए उसे स्वयं की क्षमताओं को जानना भी आवश्यक है। इस प्रकार वह स्वयं को जानते हुए विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर दल का निर्माण करता है और नवाचारों को नेतृत्व प्रदान करता है। साथ ही, वह समुदाय एवं विद्यार्थियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रोचक व ज्ञानवर्धक बनाता है। शिक्षकों के शिक्षण कौशलों में निखार लाने के लिए तथा विद्यार्थियों की संलग्नता, सक्रियता एवं ठहराव में विद्यालय प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका हो तो इन्हीं प्रयासों को विद्यालयी स्तर पर क्रियान्वित करने में विद्यालय प्रमुख के रूप में लेखक के प्रयास पूर्णतः सफल हुए तथा विद्यालय में उपस्थिति और विद्यार्थियों की सक्रियता व उपलब्धि का स्तर बढ़ा। अतः यह लेख विद्यालय प्रमुखों एवं हितधारकों को विद्यालय प्रमुख एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने में मार्गदर्शन कर सकता है।

विद्यालय को सुव्यवस्थित तरीके से संचालित करने में आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए विद्यालय प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वह समुदाय के साथ समन्वय स्थापित करते हुए, उनका सहयोग लेने की दृष्टि से सभी क्षेत्रों, जैसे—पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षण विधियाँ, शिक्षण संबंधी समस्याओं आदि का विधिवत ज्ञान होना चाहिए। तभी वह विद्यालयी शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर पाने में सफल हो सकता है। विद्यालय संचालन में विद्यालय प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय के विजन को निर्धारित करने से लेकर शिक्षण की गुणवत्ता सुनिश्चित करने, विद्यार्थियों के बेहतर निष्पादन के लिए, संसाधनों का प्रबंधन करने तक एक विद्यालय प्रमुख कई भूमिकाएँ निभाता है, जो विद्यालय की सफलता के लिए आवश्यक है। विद्यालय के बेहतर

* *माध्यमिक शिक्षक*, शासकीय नवीन माध्यमिक विद्यालय लिधौरा, विकासखंड बटियागढ़, जिला दमोह, मध्य प्रदेश – 470775

प्रदर्शन और विद्यार्थियों के आकलन के लिए विद्यालय प्रमुख एक महत्वपूर्ण कारक है। माता-पिता अपने बच्चे को विद्यालय में दाखिला दिलाने से पहले विद्यालय के नेतृत्व की पृष्ठभूमि की जाँच करते हैं, इसलिए विद्यालयों को अच्छे, प्रशिक्षित तथा प्रतिभाशाली नेतृत्व की आवश्यकता होती है, जो शिक्षा को प्रभावित करने वाले सभी कारकों की पहचान कर सकें। वास्तव में, विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के मुख्य केंद्र हैं। उत्कृष्टता और नवाचारों को बढ़ावा देने वाले उत्कृष्ट एवं उत्साही संस्थागत नेतृत्वकर्ताओं की आवश्यकता आज के समय की माँग है। एक संस्था और उसके संकाय सदस्यों की सफलता के लिए उच्चतर गुणवत्ता युक्त संस्थानिक नेतृत्व का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। संस्था के नेतृत्वकर्ता ऐसी उत्कृष्टता की संस्कृति के निर्माण को ध्यान में रखेंगे, जो सभी संकाय सदस्यों तथा उच्चतर शिक्षण संस्थानों के नेतृत्वकर्ताओं को उत्कृष्ट और नवोन्मेषी शिक्षण, शोध, संस्थागत और सामुदायिक कार्यों की और प्रेरित तथा प्रोत्साहित करें। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद – 13.7)

सरकार प्रत्येक विद्यालय में विद्यालय का नेतृत्व करने के लिए तथा सभी गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से संपादित करने के लिए एक विद्यालय प्रमुख की व्यवस्था करती है, जिसका उत्तरदायित्व होता है कि वह विद्यालय में समस्त क्रियाकलाप संपादित कराए और विद्यालय को बेहतर बनाने की दिशा में निरंतर कार्य करने का प्रयास करे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब तक विद्यालय प्रमुख स्वयं सुधारवादी पक्ष को नहीं समझ लेता, तब तक वह विद्यालय व्यवस्था में सुधार कर पाने में प्रभावी नहीं हो पाता। वास्तव में, एक विद्यालय प्रमुख को अपनी भूमिका की समझ होना अत्यंत आवश्यक है, जिससे वह स्वयं के दृष्टिकोण और क्षमताओं के प्रति जागरूक हो तथा अपने व्यक्तित्व में बदलाव लाने में सक्षम हो सके। इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि विद्यालय प्रमुख के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है तथा उसमें आत्मचिंतन की प्रवृत्ति का विकास होता है, क्योंकि विकास एक निरंतर प्रक्रिया है, जो जीवनपर्यंत चलती है, इस प्रक्रिया के अनेक पहलू होते हैं, जैसे — स्वयं के व्यवहार, सोच, ज्ञान व कौशल में परिवर्तन लाना, उनमें वृद्धि करना, सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना, स्वाध्याय को बढ़ावा देना, स्वयं को पेशेवर रूप से अद्यतन करना, अपने परिवेश तथा साथियों से सीखने का प्रयास करना आदि।

एक विद्यालय प्रमुख की मुख्य विशेषताएँ

- **पहल करना** — एक अच्छा और जागरूक विद्यालय प्रमुख सदैव किसी कार्य के लिए स्वयं की ओर से पहल करता है तथा बदलाव की शुरुआत करता है। यदि कोई कार्य करना है तो पहला कदम विद्यालय प्रमुख की ओर से ही उठाया जाता है। सफल विद्यालय प्रमुख किसी के बताने से कार्य नहीं करते हैं। वे प्रतिक्रियात्मक होने के बजाय सक्रिय होते हैं।
- **सकारात्मक दृष्टिकोण** — एक विद्यालय प्रमुख के लिए आवश्यक है कि वह स्वयं सकारात्मक होते हुए सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करे, अपने साथियों में भी सकारात्मकता विकसित करने का प्रयास करे, क्योंकि किसी भी कार्य की सफलता के

लिए सबसे पहले सकारात्मक सोच का होना आवश्यक है। सकारात्मक सोच दूसरों को प्रोत्साहित करने और उन्हें सक्षम बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- **स्वयं प्रेरित होना**—एक सफल और सशक्त विद्यालय प्रमुख में स्वयं प्रेरित होने की क्षमता विकसित होनी चाहिए। प्रेरणा सभी मानवीय व्यवहारों के मूल में होती है। उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्व-प्रेरणा हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। स्व-प्रेरणा वह शक्ति है, जो लक्ष्यों को निर्धारित करने तथा प्राप्त करने में सहायता करती है।
- **दूसरों को अभिप्रेरित करना**—कुशल विद्यालय प्रमुख संगठन में अन्य सहयोगियों के व्यवहार को प्रभावित करता है, ताकि एक सामान्य उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त करने में वे एक-दूसरे के साथ स्वेच्छा से सहयोग करे। कुशल विद्यालय प्रमुख के व्यक्तित्व में सभी को प्रभावित करने एवं साथ मिलकर कार्य करवाने की क्षमता होती है।
- **दृष्टि और उद्देश्य**—विद्यालय प्रमुख की मुख्य विशेषताओं में से एक संगठन या टीम के लिए एक स्पष्ट दृष्टि और उद्देश्य होना आवश्यक है। एक विद्यालय प्रमुख को संगठन के लक्ष्यों, मिशन तथा मूल्यों की गहरी समझ होनी चाहिए और उन्हें टीम के सामने स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सक्षम भी होना चाहिए। इससे दृष्टि और उद्देश्य निर्धारित करने में मदद मिलती है, यह टीम को एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित करता है।
- **निर्णय लेने का कौशल**—विद्यालय प्रमुख की एक और महत्वपूर्ण विशेषता शीघ्र प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता है। विद्यालय प्रमुख को कई चुनौतियों तथा बाधाओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें ऐसे निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए, जो संगठन या टीम को लाभ पहुँचाए। एक कुशल नेता के पास तुरंत एवं उचित निर्णय लेने का कौशल होना चाहिए, जिसमें जटिल जानकारी का विश्लेषण करने, विभिन्न विकल्पों के पक्ष एवं विपक्ष का मूल्यांकन करने और संगठन के लक्ष्यों तथा मूल्यों के अनुरूप निर्णय लेने में सक्षम होना सम्मिलित है।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता**—भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अर्थ अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता है। यह विद्यालय प्रमुख को सकारात्मक तथा उत्पादक कार्य वातावरण के निर्माण में मदद करती है। जिस विद्यालय प्रमुख की भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च होती है, उस टीम के सदस्यों की भावनाओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण तथा समझदार होने की अधिक संभावना होती है। वे उच्च-तनाव की स्थिति में भी अपनी भावनाओं को प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर सकते हैं, जो टीम को शांत करने और संघर्षों को रोकने में मदद कर सकती हैं।
- **उत्तरदायित्व**—एक विद्यालय प्रमुख को अपने कार्यों, निर्णयों और टीम के प्रदर्शन के लिए उत्तरदायी होना चाहिए। उन्हें स्पष्ट अपेक्षाएँ निर्धारित करनी चाहिए और उन्हें पूरा करने के लिए खुद को और टीम को जवाबदेह होना चाहिए। एक अच्छे विद्यालय प्रमुख को किसी भी गलती या विफलता का दायित्व लेने

तथा उन्हें सुधारने के लिए काम करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। इससे टीम में उत्तरदायित्व की संस्कृति का निर्माण करने में मदद मिलती है, जहाँ हर कोई अपने कार्यों और निर्णयों के लिए उत्तरदायी होता है।

- **निरंतर सीखना** — कुशल विद्यालय प्रमुख को निरंतर सीखने और व्यक्तिगत विकास के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। उन्हें फीडबैक के लिए खुला होना चाहिए तथा अपनी गलतियों से सीखने के लिए तत्पर रहना चाहिए। निरंतर सीखने से टीम को सीखने और अपने कौशल विकसित करने हेतु प्रेरित करने में भी मदद मिलती है। एक विद्यालय प्रमुख निरंतर सीखने एवं पेशेवर विकास को प्रोत्साहित करता है, वह शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करने और बनाए रखने के अधिक संभावित प्रयास करता है।

विद्यालय प्रमुख की कुछ प्रमुख भूमिका एवं दायित्व

- **विद्यालय प्रमुख का दृष्टिकोण** — विद्यालयी व्यवस्थाओं तथा शैक्षिक स्तर में सुधार लाने के लिए यह आवश्यक होता है कि विद्यालय प्रमुख अपनी भूमिका और दृष्टिकोण के बारे में अपने लक्ष्य एवं दायित्व के संबंध में स्पष्ट रहे। वह विद्यालय में ऐसे कार्य करे, जो बच्चों की वृद्धि एवं विकास को प्रेरित करे। साथ ही, निरंतर नवाचारों तथा परिवर्तनों को बढ़ावा देने के साथ उन्हें स्वीकार भी करे। विद्यालय प्रमुख के रूप में वह चुनौतियों से जूझने तथा उनका समाधान निकालने के प्रयास करने की समझ विकसित करे। विद्यालय प्रमुख का दृष्टिकोण प्रगतिशील एवं समावेशी हो, जिससे विद्यालय प्रमुख विद्यालय की वर्तमान बुनियादी आवश्यकताओं का आकलन करते हुए भविष्य का विजन बनाने में सक्षम हो सके।
- **स्वयं का विकास** — विद्यालय के साथियों की क्षमताओं, दृष्टिकोण तथा मूल्य को समझने के साथ-साथ, एक सकारात्मक अवधारणा विकसित करने के लिए विद्यालय प्रमुख को स्वयं का विकास करना आवश्यक है। इस प्रक्रिया में विद्यालय प्रमुख को स्वयं के साथ-साथ दूसरों के सतत अधिगम एवं विकास के अवसर निरंतर खोजने होते हैं एवं विद्यालय प्रमुख को चिंतन-मनन तथा अंतःक्रिया के माध्यम से स्वयं में परिवर्तन लाने का अवसर मिलता है। एक प्रमुख को जीवंत नेतृत्व प्रदर्शित करने के लिए स्वयं निवेश करना अनिवार्य है। स्वयं के विकास के लिए आत्मचिंतन करना आवश्यक है, ऐसा करने से विद्यालय प्रमुख स्वयं को सशक्त और सक्षम बना पाते हैं।
- **शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण** — विद्यालय प्रमुख की भूमिका का महत्व विद्यालयों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक बाल केंद्रित बनाकर शिक्षण-अधिगम को अन्वेषण एवं सृजनात्मकता के माध्यम से रूपांतरित करना है। यह भूमिका विद्यालय प्रमुखों को शिक्षा के उद्देश्य को समझने तथा उन मुद्दों पर चिंतन करने में सक्षम बनाती है, जैसे — बच्चों को विद्यालय क्यों आना चाहिए, शिक्षण किस प्रकार का होना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों का विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित किया जा सके।

अधिगम वातावरण कैसा हो, जिससे कि बच्चे प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण कर सकें। विद्यालय प्रमुख विभिन्न अनुभवात्मक अधिगम गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की आवश्यकताओं को समझने के लिए अध्यापकों में संवेदनशीलता विकसित करने की कोशिश करते हैं। यह शिक्षण-अधिगम से जुड़ी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं, जैसे — कक्षाओं का अवलोकन, शिक्षकों को फीडबैक देना तथा उनके लिए एक सलाहकार एवं परामर्शदाता बनना आदि पर एक विद्यालय प्रमुख के रूप में अपने कौशल विकसित करने पर भी बल देता है।

- **विद्यालय कार्य हेतु दल बनाना** — विद्यालय एक ऐसी इकाई है, जिसके सदस्य निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सहयोग एवं गंभीरता से मिलकर कार्य करते हैं। इन कार्यों को प्रभावी रूप से करने के लिए एक दल बनाने की आवश्यकता होती है, जिसमें विद्यालय प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। दल के रूप में काम करने से न केवल विद्यालय के कार्य बेहतर ढंग से क्रियान्वित होते हैं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान तथा आने वाली समस्याओं एवं चुनौतियों से निपटने के नए तरीकों को सिखाते हुए दल के प्रत्येक सदस्य की क्षमता और कौशल का निर्माण होता है।
- **नवाचारों का नेतृत्व** — विद्यालय प्रमुख को नवाचारों का नेतृत्व करने तथा समस्याओं को सुलझाने के संभावित तरीकों के रूप में अथवा बदलाव लाने के रूप में देखा जा सकता है। नवाचारों का प्रयोग न केवल समस्याओं का समाधान करने के लिए किया जाता है, बल्कि सभी लोगों को शामिल करके तथा विद्यालय में समावेशी उपायों को प्रोत्साहित करने के साधन के रूप में भी किया जाता है। एक विद्यालय प्रमुख के रूप में स्वयं को अद्यतन करते हुए विद्यालय की आवश्यकताओं को समझते हुए एक नई संस्कृति के निर्माण की शुरुआत करते हुए सदैव ही नवाचारों के लिए तैयार रहना चाहिए।

लेखक, जो एक विद्यालय प्रमुख है, ने नवाचार करने के जोखिम को उठाते हुए शासकीय नवीन माध्यमिक विद्यालय, लिधौरा, विकासखंड-बटियागढ़, जिला दमोह, मध्य प्रदेश में समुदाय को विद्यालय के साथ जोड़ने तथा विद्यार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने एवं उनका ठहराव सुनिश्चित करने के लिए कुछ प्रयास किए, जिनका उल्लेख इस प्रकार है —

विद्यार्थी उपस्थिति एवं नियमितता के प्रयास

किसी भी विद्यालय प्रमुख का सबसे मुख्य कार्य होता है, विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना, लेकिन विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विद्यार्थियों का उपस्थित होना बहुत आवश्यक है। कई बार ऐसा होता है कि विद्यार्थी उपस्थित तो होते हैं, परंतु उनकी नियमितता नहीं होती और जब तक विद्यार्थी नियमित रूप से उपस्थित नहीं होगा, तब तक उसकी सीखने की प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न होता रहेगा। शासकीय नवीन माध्यमिक विद्यालय, लिधौरा के विद्यालय प्रमुख के रूप में मैंने स्वयं ऐसी समस्याओं का सामना किया है। जब विद्यार्थी सप्ताह में दो या तीन दिन विद्यालय में उपस्थित होते थे। अनेक विद्यार्थी तो ऐसे थे, जो विद्यालय

प्रारंभ होने के बाद बहुत देर से आते थे और कई बार तो भोजना अवकाश के बाद आते ही नहीं थे। इस समस्या के समाधान हेतु जो उपाय किए गए वे उपाय सफल भी हुए एवं विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति में उल्लेखनीय रूप से सुधार भी आया, जो इस प्रकार है—

- **साप्ताहिक पुरस्कार**—प्रत्येक शनिवार को होने वाली बालसभा में ऐसे विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया, जो पूरे सप्ताह समय पर उपस्थित होकर सभी कक्षाओं एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय रहे एवं विद्यालय के निर्धारित समय तक उपस्थित रहे। इसका सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि विद्यालय में उपस्थित रहने वाले अधिकांश विद्यार्थी शिक्षण प्रक्रिया में सम्मिलित होने के साथ-साथ आयोजित होने वाली अन्य सह-शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय रहे। साथ ही, पुस्तकालय का उपयोग बढ़ गया एवं खेल गतिविधियों में विद्यार्थियों की सक्रियता उल्लेखनीय रूप से बढ़ गई।
- **मासिक पुरस्कार**—ऐसे विद्यार्थी जो पूरे माह में सर्वाधिक उपस्थित रहे एवं जिन्होंने सक्रिय रूप से विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता की। उन्हें प्रार्थना सभा में सामूहिक रूप से प्रोत्साहित करते हुए पुरस्कृत किया गया। जिससे अन्य विद्यार्थियों में भी विद्यालय आने की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जाग्रत हुई।
- **सूचना पटल पर नाम प्रदर्शन**—विद्यार्थियों की उपस्थिति को नियमित करने के लिए एवं उनकी सक्रियता बढ़ाने के लिए उनमें एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जाग्रत करना आवश्यक था। इसके लिए विद्यालय प्रबंधन ने संपूर्ण माह सर्वाधिक उपस्थिति वाले विद्यार्थियों के नाम अगले एक सप्ताह तक विद्यालय के सूचना पटल पर प्रदर्शित करने का निर्णय लिया। इसका लाभ यह हुआ कि विद्यालय में आने वाले सभी अभिभावक सूचना पटल पर प्रदर्शित नामों के बारे में चर्चा करते थे, सभी विद्यार्थियों के सामने उन विद्यार्थियों की शत-प्रतिशत उपस्थिति के कारण उनके नाम उल्लेखित होने की चर्चा की जाती थी, जिससे अन्य विद्यार्थियों में भी नियमित विद्यालय आने की भावना उत्पन्न हुई और विद्यालय की उपस्थिति अप्रत्याशित रूप से बढ़ गई।
- **पीले चावल देकर आमंत्रण**—विद्यालय मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में है, जहाँ पर अतिथियों को पीले चावल देकर आमंत्रित करने का प्रचालन है। विद्यालय प्रबंधन ने इसका उपयोग विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने के उद्देश्य से किया। इसके लिए विद्यालय प्रमुख ने अन्य अध्यापकों को साथ लेकर ऐसे विद्यार्थियों को चिह्नित किया, जिनकी उपस्थिति विद्यालय में या तो कम होती थी या अनियमित थी, उनके अभिभावकों से मिलकर उन्हें पीले चावल देकर उनके पुत्र या पुत्री को नियमित समय पर विद्यालय पहुँचने तथा पूरे समय विद्यालयी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए आग्रह किया। पीले चावल के आमंत्रण का विशेष महत्व होने के कारण वे आग्रह को टाल नहीं सके और अपने-अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजना आरंभ किया। इस प्रयास से विद्यालय की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ एवं विद्यार्थियों की नियमितता अपेक्षित रूप से बढ़ गई।

- **विद्यालय प्रबंधन समिति का सहयोग**—निश्चित रूप से समुदाय की सहभागिता विद्यालय के प्रत्येक आयाम को गति देने में सहायक होती है। विद्यालय प्रमुख ने इसका लाभ उठाते हुए विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों का प्रत्येक मोहल्ले के अनुसार विभाजन किया कि कौन-से सदस्य किस मोहल्ले के निवासी हैं। उस मोहल्ले के जो विद्यार्थी नहीं आ रहे थे या अनियमित आ रहे थे, उन्हें चिह्नित करते हुए विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को साथ लेकर अभिभावकों से संपर्क किया गया। इन सदस्यों ने उन अभिभावकों को समझाने का प्रयास किया एवं उन्हें शिक्षा की आवश्यकता और महत्व की जानकारी दी तथा सदस्यों ने उनसे चर्चा की तो वह भी अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने को तैयार हुए तथा विद्यालय की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ।
- **बाल कैबिनेट का उपयोग**—विद्यार्थियों को समय से और नियमित रूप से विद्यालय लाने के लिए विद्यालय प्रबंधन ने बाल कैबिनेट का उपयोग किया। इसके अंतर्गत बाल कैबिनेट के सदस्यों और अन्य विद्यार्थियों की आपस में जोड़ियाँ बनाई गईं कि कौन विद्यार्थी किसके घर जाएगा। पहले एक विद्यार्थी दूसरे के घर जाएगा फिर दो विद्यार्थी तीसरे के घर जाएँगे फिर तीन विद्यार्थी मिलकर चौथे के घर जाएँगे। इससे विद्यालय को यह लाभ हुआ कि यदि कोई विद्यार्थी विद्यालय नहीं आ रहा है तो उसका वास्तविक कारण पता चल जाता था। इसके अतिरिक्त यदि कोई विद्यार्थी घर पर विद्यालय न आने का बहाना बना रहा हो तो जब उसके घर बाल कैबिनेट सदस्य के साथ दूसरे विद्यार्थी जाते थे तो उसका वह बहाना भी खत्म हो जाता था। एक और लाभ यह हुआ कि जब किसी विद्यार्थी के घर पर तीन या चार विद्यार्थी एक साथ किसी बच्चे को विद्यालय लाने के लिए जाते थे तो उनके अभिभावक भी उन विद्यार्थियों से प्रभावित होकर अपने बच्चों को प्रसन्नतापूर्वक विद्यालय भेजने के लिए तैयार हो जाते थे। यह क्रम चलने से विद्यालय की उपस्थिति लगभग शत-प्रतिशत हो गई।
- **नियमित अभिभावक शिक्षक बैठक**—विद्यार्थियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को नियमित रूप से अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें अभिभावकों को उनके बच्चों की मासिक उपस्थिति बताने के साथ-साथ उनके द्वारा विद्यालय में किए गए कार्यों एवं गतिविधियों में सहभागिता का विवरण दिया गया। जिससे अभिभावकों में एक भाव उत्पन्न हुआ कि उनके बच्चों के समग्र विकास के लिए विद्यालय प्रबंधन समर्पित होकर कार्य कर रहा है। अतः इस गतिविधि से प्रभावित होकर उन्होंने भी अपने बच्चों को समय से और नियमित रूप से विद्यालय भेजने में सहयोग किया।
- **अभिभावक सम्मान**—विद्यालय में अनियमित और विलंब से उपस्थित होने वाले विद्यार्थियों से चर्चा करने के बाद पता चला कि कुछ अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय भेजने की बजाय अन्य कार्यों में लगा देते हैं। इसका

समाधान करने के लिए विद्यालय प्रबंधन ने एक नया तरीका निकाला, जिसमें प्रत्येक माह समीक्षा करने के बाद जिन विद्यार्थियों की उपस्थिति सर्वाधिक होती थी, उनके घर जाकर उन विद्यार्थियों के अभिभावकों का उस मोहल्ले के लोगों के बीच सम्मान किया गया, जिससे वह पूरे मोहल्ले में सम्मान की दृष्टि से देखे जाने लगे। इसका सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि उस मोहल्ले के अन्य अभिभावकों को भी यह लगा कि यदि वह भी अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजेंगे तो इसी प्रकार उनका भी सम्मान होगा। अगले महीने सम्मानित होने वाले अभिभावकों की संख्या में वृद्धि हुई। इस प्रकार अनियमित रुप से विद्यालय आने वाले विद्यार्थियों की समस्या का समाधान हो गया।

- **बालसभा में अभिभावक आमंत्रण**— विद्यालय में विद्यार्थियों के बीच उपस्थिति एवं नियमितता की स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए एक नया प्रयास किया गया, जिसके अंतर्गत जिन विद्यार्थियों की सप्ताह में सर्वाधिक उपस्थिति रहती थी उनके अभिभावकों को शनिवार को होने वाली बालसभा में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता था। जिससे अन्य अभिभावकों में भी अतिथि के रूप में विद्यालय आने की भावना ने जन्म लिया और उन्होंने अपने बच्चों को नियमित और समय से विद्यालय भेजना आरंभ किया। इसके फलस्वरूप विद्यालय की उपस्थिति में आशातीत वृद्धि हुई।
- **जागरूक नागरिक समिति**—गाँव में कुछ ऐसे भी वरिष्ठ लोग होते हैं, जिनका सामाजिक प्रभाव बहुत अधिक होता है। उनकी बात को टाल पाना सामान्यतः कठिन होता है। चूँकि उनके बच्चे विद्यालय में न होने से न तो वह विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य होते हैं और न ही अभिभावक होते हैं, ऐसे में उनके अनुभव लाभ विद्यालय को नहीं मिल पाता। ऐसे में विद्यालय ने एक नया तरीका निकालते हुए विद्यालय स्तर की जागरूक नागरिक समिति का गठन किया, जिससे विद्यालय का समुदाय के साथ एक सशक्त समन्वय स्थापित हो सके। जो अभिभावक अपने बच्चों को नियमित विद्यालय नहीं भेज रहे थे, इसके लिए जब गाँव के वरिष्ठ और प्रतिष्ठित लोगों की समिति को गठित कर उनसे संपर्क किया गया तो उन वरिष्ठ लोगों की बात को वह अभिभावक भी नहीं टाल सके और नियमित रूप से अपने बच्चों को विद्यालय भेजने लगे। जिससे विद्यालय की उपस्थिति और बच्चों का ठहराव उल्लेखनीय रूप से बढ़ गया।
- **राष्ट्रीय पर्व पर सम्मान**—विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति को बढ़ाने और उनकी नियमितता सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों में आगे बढ़ते हुए, ऐसे विद्यार्थी जिनकी उपस्थिति और नियमितता संपूर्ण शैक्षिक सत्र में सर्वाधिक रही, उनके अभिभावकों को राष्ट्रीय आयोजन, जैसे स्वतंत्रता दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रम में मंच के माध्यम से उपस्थित सामान्य अतिथियों और जनप्रतिनिधियों द्वारा सम्मानित किया गया एवं अपने बच्चों को वर्ष में नियमित विद्यालय भेजने हेतु आभार व्यक्त किया गया। इसका प्रतिफल यह रहा कि जो अन्य अभिभावक उस सांस्कृतिक कार्यक्रम में दूसरे अभिभावकों को सम्मानित होते हुए देख रहे

थे, उन्हें भी प्रेरणा मिली कि यदि वह भी अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजें तो ऐसा सार्वजनिक सम्मान उन्हें भी प्राप्त हो सकता है। इससे विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति के स्तर में अत्यधिक सुधार हुआ।

- **प्रार्थना सभा संचालन का अवसर देना**—विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति नियमित करने के लिए विद्यालय प्रबंधन ने एक और नवाचार किया, जिसमें जो विद्यार्थी सर्वाधिक उपस्थित रहेगा उसे विद्यालय की प्रार्थना सभा का संचालन करने का अवसर प्राप्त होगा। इससे विद्यार्थियों में एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का जन्म हुआ और अधिक से अधिक विद्यार्थी विद्यालय में सर्वाधिक उपस्थिति का प्रयास करने लगे।

विद्यालय प्रमुखों की समस्याएँ

निश्चित रूप से इन सभी प्रयासों से नामांकन ठहराव और उपस्थिति में उपलब्धिपरक वृद्धि हुई। परंतु इसके साथ-साथ विद्यालय प्रमुखों को अनेक बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है, जिनका समाधान किए बगैर एक उत्कृष्ट एवं सशक्त विद्यालय की संकल्पना नहीं की जा सकती, जिनमें प्रमुख हैं—

- अध्यापकों की शिक्षणेत्तर कार्यों में संलग्नता वर्तमान में विद्यालय प्रमुखों की एक प्रमुख समस्या है। अनेक अध्यापक शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यों, जैसे— मतदाता सूची या लिपकीय कार्यों में संलग्न होते हैं।
- **विद्यालय फंड का अपर्याप्त एवं विलंब से आवंटन**—विद्यालयों को लगभग सत्र समाप्ति पर विद्यालय फंड आवंटन होता है और वह भी अपर्याप्त।
- **विषयवार अध्यापकों का न होना**—शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एक औपचारिकता नहीं है, अपितु अध्यापकों के आत्मसात करने वाली प्रक्रिया है इसके लिए विषयवार अध्यापकों का होना अत्यंत आवश्यक है।
- **पी.एम. पोषण का कार्य भार**—पी.एम. पोषण हेतु विद्यार्थियों की उपस्थिति और उसकी प्रतिदिन माँगी जाने वाली जानकारी विद्यालय प्रमुखों के लिए प्रमुख बाधाकारी और मानसिक तनाव वाला कार्य है, क्योंकि इसमें अध्यापकों का बहुत सारा समय अपव्यय हो जाता है।
- **गैर-शैक्षणिक कार्यों की अधिकता**—विद्यालय में वैसे भी अध्यापकों की कमी है और उन्हें अन्य कार्य भी करने पड़ते हैं। विद्यालय के विद्यार्थियों की मैपिंग, विद्यार्थी-वृत्ति-फीडिंग, साइकिल वितरण, गणवेश वितरण, नवभारत साक्षरता, विभिन्न प्रकार के सर्वे कार्यों में अध्यापकों को संलग्न करना आदि अध्यापक इन्हीं प्रक्रियाओं में उलझा रहता है, जिससे निश्चित रूप से शिक्षण गुणवत्ता प्रभावित होती है।
- **मोबाइल के कार्यों में अधिक समय का व्यय होना**—निश्चित रूप से आज का युग तकनीकी का युग है, परंतु शिक्षण के लिए समय का पाबंद होना अत्यंत आवश्यक है, परंतु आज प्रत्येक कुछ मिनट के बाद कोई न कोई जानकारी तुरंत मोबाइल पर माँगी जाती है, जिससे अध्यापकों का बहुत-सा समय मोबाइल में व्यर्थ निकल जाता है और शिक्षक कार्य प्रभावित होता है।

- **अनावश्यक बैठकों का आयोजन**—आए दिन होने वाली बैठकें, जिसमें विद्यालय प्रमुखों को सम्मिलित होना पड़ता है, शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, क्योंकि वैसे भी विद्यालयों में अध्यापकों की कमी है, ऊपर से इन बैठकों से एक व्यक्ति की कमी और हो जाती है।
- **अभिभावकों की उदासीनता**—विद्यालयों के सफल संचालन में अभिभावकों की सहभागिता अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण होती है, परंतु अनेक स्थानों पर अभिभावकों का पर्याप्त सहयोग न मिलने से शिक्षण प्रक्रिया प्रभावित होती है।
- **विद्यालय प्रबंधन समितियों का सक्रिय न होना**—विद्यालय प्रबंधन समितियों का गठन विद्यालय के पारदर्शी संचालन की दृष्टि से किया जाता है, परंतु अधिकतर विद्यालयों में ये समितियाँ सक्रिय अवस्था में नहीं हैं जिसके कारण शिक्षण प्रक्रिया कठिन होती है।
- **विद्यालयों में कक्षों की कमी**—अधिकतर विद्यालयों में कक्षों की कमी है, न तो गतिविधि कक्ष है, न व्यवस्थित पुस्तकालय कक्ष है, न ही प्रयोग विद्यालय कक्ष है। अनेक विद्यालय तो ऐसे भी हैं, जो अलग-अलग पारियों में संचालित होते हैं, ऐसे में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए संपादित होने वाली सभी गतिविधियों का संचालन आसान नहीं है।
- **पानी की कमी**—अनेक विद्यालय ऐसे हैं, जहाँ पर फरवरी माह के अंत से ही पानी की समस्या शुरू हो जाती है ऐसे में अधिकतर विद्यालय प्रमुखों का समय पानी की व्यवस्था करने में ही निकल जाता है।
- **विद्युत व्यवस्था की उपलब्धता**—अनेक विद्यालयों में सुचारु विद्युत व्यवस्था नहीं होने के कारण शिक्षण प्रक्रिया प्रभावित होती है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण संचालित न होने से अनेक प्रकरणों को समझना कठिन होता है।

विद्यालय प्रमुखों से चर्चा के पश्चात निष्कर्ष

- अध्यापकों को किसी भी प्रकार के लिपकीय कार्य, मतदाता सूची या जनगणना आदि के कार्य से पूर्णत: मुक्त रखा जाना चाहिए, जिससे वह अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पूर्ण सहभागिता कर सकें।
- विद्यालयों को सत्र प्रारंभ होते ही पर्याप्त मात्रा में फंड उपलब्ध करवा दिया जाना चाहिए, जिससे विद्यालय की आवश्यकताओं की पूर्ति यथोचित समय पर हो सके।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए सभी विद्यालयों में अनिवार्य रूप से विषयवार अध्यापक उपलब्ध करवाए जाने चाहिए।
- अध्यापकों को गैर शैक्षणिक कार्य, जैसे—विभिन्न प्रकार के सर्वे, साइकिल वितरण, विद्यार्थी-वृत्ति-फीडिंग, गणवेश वितरण, मैपिंग आदि कार्यों से मुक्त रखते हुए यह कार्य विकासखंड स्तर से किया जाना चाहिए। अध्यापकों को पी.एम. पोषण वितरण की प्रक्रिया से एवं उसकी जानकारी से मुक्त रखा जाना चाहिए। इस कार्य को पी.एम. पोषण वितरण करने वाली एजेंसी या ग्राम पंचायत को सौंप देना चाहिए।
- शैक्षणिक अवधि के दौरान किसी भी प्रकार की जानकारी मोबाइल के माध्यम से नहीं माँगी जानी चाहिए। विद्यालय समय के पूर्व या पश्चात

इस प्रकार की जानकारी का एकत्रीकरण किया जाना चाहिए।

- विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ एकत्रित करने के लिए अनावश्यक रूप से बैठकों का आयोजन नहीं होना चाहिए, यदि आवश्यक हो तो महीने में केवल एक बैठक आयोजित की जानी चाहिए।
- अभिभावकों की उदासीनता दूर करने के लिए ग्राम पंचायत, विभिन्न गैर-शासकीय संगठन और स्थानीय स्तर पर कार्यरत अन्य शासकीय व्यवस्था का भी सहयोग लिया जाना चाहिए।
- विद्यालय प्रबंधन समितियों की मासिक बैठकों के लिए विकासखंड स्तर से अधिकारी नियुक्त किए जाने चाहिए, जिससे सभी विद्यालयों में सक्रिय बैठकें आयोजित की जा सकें।
- विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप सभी विद्यालयों में आवश्यक कक्षों का निर्माण करवाया जाना चाहिए।
- जिन विद्यालयों में संपूर्ण सत्र के लिए पानी की व्यवस्था नहीं होती, उनके लिए ग्राम पंचायत या स्थानीय एजेंसियों के माध्यम से पानी की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- विद्यालयों में विद्युत व्यवस्था को निर्बाध रूप से सुनिश्चित करने के लिए विद्यालयों की बात विद्युत विभाग को प्रमुखता से सुननी चाहिए एवं उनकी समस्याओं का निराकरण करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वैकल्पिक विद्युत व्यवस्था का भी प्रबंधन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

गुणवत्तापूर्ण और उपलब्धिपरक शिक्षा के लिए विद्यार्थियों का नियमित विद्यालय आना और पूरे समय उपस्थित रहना आवश्यक है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यालयों के प्रभावी ढंग से निष्पादन के लिए विद्यालय प्रमुख का सशक्तीकरण महत्वपूर्ण है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा समय-समय पर विद्यालय प्रमुखों के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों के साथ-साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं, लेकिन इसके स्थायी समाधान के लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में पूर्णकालिक विद्यालय प्रमुखों की पदस्थापना हो, क्योंकि शिक्षण के साथ-साथ विद्यालय प्रमुख के दायित्व का निर्वहन करने से अधिकांश शिक्षकों के दोनों कार्य प्रभावित होते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर जिस प्रकार राष्ट्रीय विद्यालय प्रमुख केंद्र, नीपा, नई दिल्ली द्वारा विद्यालय प्रमुखों को प्रशिक्षित करने का कार्य कर रहा है। उसी प्रकार प्रत्येक राज्य में भी नेतृत्व अकादमियों का गठन किया जाना चाहिए, जिससे संबंधित राज्य के विद्यालय प्रमुखों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके।

संदर्भ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2019. *विद्यालय प्रमुख विकास पर प्रशिक्षण पैकेज*. सितंबर, 2019. पृष्ठ संख्या 05.09.10.11. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.